॥ श्री ॥
॥ बाबा ॥

बाबा मेरे हैं स्वामी मेरे प्राण
करते हैं वो मेरे लिए सबकुछ
हैं वो सबकुछ मेरे लिए ॥ धृ ॥

बाबा बिना हैं जीवन मेरा
जैसी जलती चिता
बाबा ज्योत से दिया जले ये
करे काम हजार
बाबानामही तेल हैं इसमें
जिससे जाए अंधेरा ॥ 1 ॥

दूर जो हू मैं शरीर से मेरे
मन तो सदा ही रोए
चाहे छोडू सारा जगत ये
आऊ पास तुम्हारे
सुख दुःख बाँटने की
आस हैं मनमें
और दर्शन की प्यास ॥ 2 ॥

कहते हैं लोग बाबा मुझे ये
शरण आयी हूँ मैं आपके
हैं कैसी ये शरणांकिता
रह ना सकू दुर आपसे
है कैसा ये रिश्ता मनका

अलग हैं जो मेरे बाबासे ॥ 3 ॥
अंतर मन की हैं ये प्रार्थना
कहदो मुझे आप आपकी
जोड दो मेरी साँसे आपसे
बुझादो साँसे इस देह की
करते हो पूरी आशाएँ मेरी
कब होगी ये आस पूरी ॥ 4 ॥

★★★★★